L. N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - III
B.A PAPER - VII
PSYCHOLOGY (Honours)
TOPIC - Theories of
socialization.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant - Professor,
Guest - Teacher,
V.S.J. College - Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com.

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज के नियमों, मानकों (norms) आदियों के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है। व्यक्ति में समाजीकरण किस प्रकार होता है और क्यों होता है इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने कुछ सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इनमें प्रमुख सिद्धान्त निम्न हैं।

(i) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त
(ii) सामाजिक सीखना सिद्धान्त
(iii) संज्ञानात्मक विकासात्मक सिद्धान्त
(iv) दुर्खीम का सिद्धान्त
(v) कूले का सिद्धान्त
(vi) मीड का सिद्धान्त

इन सिद्धान्तों में से प्रथम तीन सिद्धान्तों पर समाज मनोवैज्ञानिकों ने अधिक बल डाला है जबकि अन्तिम तीन सिद्धान्त पर समाजशास्त्रियों ने अधिक बल डाला है। इन पाँचों सिद्धान्तों का वर्णन इस प्रकार है।

(1) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मशहूर मनोवैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तियों का समाजीकरण बाल्यावस्था में माता-पिता के प्रेम, दुलार आदि क्रियाओं पर निर्भर करता है।

फ्रायड के अनुसार के अनुसार व्यक्तित्व विकास के कुछ मनोलैंगिक अवस्थाएं होती हैं। इन विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों का माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बहुत सारी अन्तःक्रियाएं होती हैं। उदाहरणस्वरूप माँ बच्चों को भोजन प्रशिक्षण देती है तथा उसे समय पर भोजन देती है उसको स्नान कराती है तथा वस्त्र पहनाती है। इस तरह क्रियाओं के दौरान माँ, बच्चे को प्यार-

व्यवहार करते हैं तो उनका उचित दोहराव भी है। यह तरह से माँ और बालक के बीच एक सांवेगिक सम्बन्ध हो जाता है।

(III) सामाजिक सीखना सिद्धान्त :- (Social learning theory)
समाजीकरण के यह सिद्धान्त के प्रतिपादक व्यवहारवादियों के विपरीत कुछ लोगों ने व्यवहार के सिद्धान्त से समाजीकरण की आलोचना करते हुए कहा है कि यह प्रक्रिया के द्वारा समाजीकरण की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं हो सकती है क्योंकि व्याख्या करना इस प्रक्रिया को केवल यही मात्र नहीं हो सकती है। अतः एक मनोवैज्ञानिकों ने समाजीकरण को व्यापक सीखने की प्रक्रिया माना है। यह सिद्धान्त के समर्थकों का कहना है कि व्यक्ति में समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया द्वारा होता है और यह तरह की सीखने की प्रक्रिया निम्नांकित तीन तरह से होती है।

(I) बच्चे समाज के नियमों के अनुसार व्यवहार करना माता पिता द्वारा दिए गए पुरस्कार के आधार पर सीखते हैं। माता पिता बच्चों को कुछ व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा वैसा व्यवहार करने पर उन्हें उचित पुरस्कार भी देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे उस व्यवहार को बार बार करके उचित सामाजिक परिस्थिति में उसे करना सीख लेते हैं। इसके तरह कुछ व्यवहार ऐसे भी होते हैं जिन्हें माता पिता नहीं करने के लिए प्रेरित करते हैं और यदि बच्चे उन्हें करते हैं तो उसके लिए उन्हें दंड भी दिया जाता है। यह तरह की पुरस्कार एवं दंड के आधार पर बच्चों को माता-पिता समाजीकृत करते हैं।

(II) कुछ मनोवैज्ञानिकों के जिसमें (Albert Bandura) का नाम अधिक मशहूर है। यह बात पर बल डाले हैं कि बच्चे मॉडल (model) के व्यवहार या हरकतें जो किसी सामाजिक परिस्थिति में कैसे व्यवहार कर रहे हैं को देखकर भी नये-नये सामाजिक व्यवहारों को करना सीख जाते हैं। यह तरह के सीखना को प्रेक्षणात्मक सीखना कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

(स) सांकेतिक - अन्तःक्रियात्मक सिद्धान्त - सांकेतिक - अन्तःक्रियात्मक सिद्धान्त की उत्पत्ति भी अनेक - अनेक पद्धति समाजशास्त्रीय विचारधाराओं के मिलन से महत्वपूर्ण हुई है। सांकेतिक - अन्तः - क्रिया की विचारधारा तथा अन्तःक्रियात्मक समाज की विचारधारा के मिलन से महत्वपूर्ण हुई है। सांकेतिक अन्तःक्रिया की विचारधारा और समाज की स्व - प्रकृति की अवधारणा यह समस्या को रखता है। सम्पूर्ण में आत्म की उत्पत्ति एवं विकास समाज में व्यक्ति तथा विभिन्न व्यक्ति अन्तःक्रियाओं पर निर्भर करता है। समाज व्यक्ति को भिन्न - भिन्न तरह की सामाजिक भूमिका प्रदान करता है। इन भूमिकाओं के द्वारा वह पता लगाता है कि व्यक्ति से समाज किस रूप से व्यवहार की उम्मीद करता है। इन भूमिकाओं के द्वारा पता लगता है कि व्यक्ति से समाज किस रूप से व्यवहार की उम्मीद करता है। जब कोई - व्यक्ति समाज द्वारा बताये गये भूमिका को समझ लेता है तथा उसके अनुसार कार्य करना प्रारम्भ कर देता है तो ऐसा समझा जाता है कि वह समाजीकृत हो गया है। सांकेतिक अन्तः - क्रिया उपागम में व्यक्ति किसी कार्य को प्रारम्भ करने वाला स्वयं ही होता है तथा - साथ - ही साथ उसके प्रति प्रतिक्रिया करने वाला भी स्वयं ही होता है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति किसी व्यवहार का कर्ता भी होता है तथा - साथ - ही साथ प्रतिकर्ता भी होता है। जब कोई - व्यक्ति अपने इन दोनों भूमिकाओं पहल - कर्ता, एवं प्रतिकर्ता के रूप में सफल होता है तो ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति का आत्म (self) का विकास हो गया है।

(य) कूले का सिद्धान्त (Theory of Cooley) कूले एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्री हैं जिन्होंने समाजीकरण के एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। उनका विचार है कि मानव स्वभाव मूल रूप से उन आदतों से विकसित होता है। जिसे वह दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप सीखता है। कूले का मत है कि जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है तो उसे कुछ नया अनुभव होता है।

जिससे उसमें सामाजिक-प्रमाणात्मक प्रवृत्ति विकसित होती है। और वह समाज के व्यवहार को सीखता है। फलस्वरूप उसमें नयी आदतें बन जाती है। क्योंकि यह भी स्पष्ट कर दिया है। कि जब तक कोई व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति के सम्पर्क में नहीं आता है, उसे अपनी आदतों, क्रियाओं, भावनाओं के बारे में बहुत-सा ज्ञान नहीं हो पाता है। ऐसी अवस्था में वह अपने संबंध में कोई निर्णय भी नहीं ले पाता है। जब वह दूसरे से सम्पर्क कर अपने बारे में लोगों की धारणाओं से अवगत हो जाता है। तो वह अपने बारे में वैसा ही सोचता है। और फिर वैसी ही आदतें विकसित कर लेता है। उदाहरणार्थ यदि शिक्षक किसी व्यक्ति की बुद्धि की प्रशंसा हमेशा करते हैं, तो व्यक्ति अपने बारे में यह सोचने के लिए विवश हो जाता है। कि वह सचमुच ही अधिक बुद्धिमान है। इसके परिणाम स्वरूप होता यह है कि वह किसी पाठ या कार्य को ध्यान से सुनकर उसे सबसे पहले सीख लेने की कोशिश करता है। इसके उलट यदि शिक्षक किसी व्यक्ति को हमेशा मूर्ख या उल्लू कहते हैं तो धीरे-धीरे यह विचार उस व्यक्ति के मन में घर कर जाता है और वह वास्तव में मूर्ख जैसा व्यवहार करने लगता है। इससे स्पष्ट है। कि दूसरों के मूल्यांकन को आधार बनाकर ही व्यक्ति अपने आप को दूसरे की निगाह से देखता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 30/08/2020
Sub. Psychology